

Hindustan
24-3-2023

आईसीएफआरई ने वन पौधों की किस्में जारी की

24/03/2023

देहरादून। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) ने गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन यूकेलिप्टस, कैजूरिना, पॉपलर, डेलबर्जिया, मीलिया और अन्य स्वदेशी वृक्ष प्रजातियों की 69 किस्में जारी की। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत ने कहा कि इनका उपयोग पारि-पुनर्स्थापन, वृक्षारोपण और कृषि वानिकी में किया जा सकता है।

Amar Ujala
24-3-2023

उच्च उत्पादकता वाले 69 पेड़ों के क्लोन किए विकसित

देहरादून। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के विभिन्न संस्थानों ने उच्च उत्पादकता वाले बहुउपयोगी पेड़ों के 69 क्लोन विकसित किए हैं। इससे किसान कृषि वानिकी से अतिरिक्त आय कर सकेंगे। यह कहना है परिषद के वैज्ञानिकों का। उन्होंने यह बात परिषद परिसर में आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन कही। वैज्ञानिकों ने कहा सागौन की उत्पादन अवधि 40 वर्ष से घटाकर छह वर्ष की जा सकती है।

उत्पादकता वृद्धि के लिए नर्सरी प्रबंधन और पौधरोपण तकनीकों पर सत्र के तहत भारत, थाईलैंड और मलेशिया के विशेषज्ञों ने उत्पादकता बढ़ाने के लिए नर्सरी और पौधारोपण तकनीकों पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यूकेलिप्टस, कैजूरिना, पॉपलर, डेलबर्जिया, मीलिया और अन्य स्वदेशी वृक्ष प्रजातियों की 69 क्लोन विकसित किए गए हैं। मा.सि.रि.

वृक्षों के 69 क्लोन किए तैयार, बढ़ी गुणवत्ता

देहरादून: वन गुणवत्ता और उत्पादकता पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आइसीएफआरई) में अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में भारत समेत थाईलैंड व मलेशिया के विशेषज्ञों ने वन उत्पादकता बढ़ाने को नर्सरी और वृक्षारोपण तकनीक को साझा किया।

गुरुवार को आयोजित तकनीकी सत्रों में आइसीएफआरई के विज्ञानियों ने वृक्ष सुधार की दिशा में किए गए क्लोनिंग के कार्यों की जानकारी दी। परिषद के महानिदेशक एएस रावत ने कहा कि यूकेलिप्टस, कैजूरिना, पापलर, डेलबर्जिया, मिलिया व अन्य स्वदेशी वृक्ष प्रजातियों के 69 क्लोन/किस्म तैयार की गई हैं।(जासं)

The Hawk
24-3-2023

ICFRE Has Released 69 High Yielding Improved Clones/Varieties Of Various Forestry Species For Enhancing Forest Productivity

Dehradun (The Hawk): In the second day of International Workshop on "Enhancing Ecosystem Services by Improving Forest Quality & Productivity and SLEM Knowledge Dissemination" at ICFRE, Dehradun, thirteen different forestry related topics were presented by the speakers from India, Malaysia, Thailand, Japan and Myanmar in two sessions.

In the session on Nursery Management and Plantation Techniques for Productivity Enhancement, presentations were given by experts from India, Thailand and Malaysia. For enhancing productivity, emphasis was on nursery and plantation techniques and the need for easy availability of quality planting material. ICFRE has released 69 clones/varieties of tree species such as Eucalyptus, Casuarina, Poplar, Dalbergia, Melia and other indigenous tree species. These can be used for eco-restoration, plantation and in agroforestry. It

was stressed that mosaic of clone cultivation would ensure in maintaining the genetic base. The speaker from Thailand discussed the Opportunities for short rotation teak farming and stated that the gestation period of teak can be reduced from 40 years to 6 years. Potential of *Shorea roxburghii* in rehabilitation of degraded areas as a case study was presented by a speaker from FRI, Malaysia.

In the session on Forest Land Restoration Techniques for Improving Forest Quality and Productivity, expert from FRI, Malaysia discussed the success in land restoration by using a pioneer species *Macaranga tanarius*. Representative from IUCN deliberated on the initiatives taken to meet 2030 Bonn Challenge by using innovative tools such as Restoration of Opportunities Optimization Tool (ROOT) for assessment of ecosystem trade off and the impact of eco-restoration. Success story of forest restoration efforts through community forestry in Nepal along with the role of government in financing mechanism for mountain landscape restoration was stressed by speakers from Nepal. The role of ecosystem based adaptation in rejuvenating landscapes to transform rural India, and core model supported by different forest and best practices for eco-restoration in Gujarat was presented. Speaker from Myanmar stated the opportunities in sustainable land and ecosystem management showcasing a mangrove ecosystem. Role of eco-budgeting in restoring forest ecosystem services and the needs for its value assessment was explained through a case study of Karnataka.

भा.वा.अ.शि.प. ने वन उत्पादकता बढ़ाने के लिए विभिन्न वानिकी प्रजातियों की 69 उच्च उपज वाले उन्नत क्लोन/किस्मों को जारी किया

देहरादून, संवाददाता। भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में वन गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार के माध्यम से पारितंत्र सेवाओं की संवर्द्धि और स्तैम ज्ञान का प्रसार पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन, भारत, मलेशिया, थाईलैंड, जापान और म्यांमार के वक्ताओं द्वारा दो अलग-अलग सत्रों में वानिकी से संबंधित तेरह अलग-अलग विषयों को प्रस्तुत किया गया।

उत्पादकता वृद्धि के लिए नर्सरी प्रबंधन और पोषण तकनीकों पर सत्र के अंतर्गत भारत, थाईलैंड और मलेशिया के विशेषज्ञों द्वारा उत्पादकता बढ़ाने के लिए नर्सरी और वृक्षारोपण तकनीकों पर जोर दिया गया और गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री की आपूर्ति उपलब्धता की आवश्यकता बताई गई। भा.वा.अ.शि.प. ने फुकेटिनटस, कैयूरिया, पाँपलर, डेलबर्गिया, मॉलिया और अन्य स्वदेशी वृक्ष प्रजातियों की 69 क्लोन/किस्मों को जारी किया। इनका उपयोग पारि-पुनर्स्थापन, वृक्षारोपण



और कृषि वानिकी में किया जा सकता है। इस बात पर जोर दिया गया कि क्लोन की विविधता, आनुवंशिक आधार को बनाए रखने में मददगार होगी। थाईलैंड के वक्ता ने सागीन की लघु चरनीय खेती के अवसरों की चर्चा करते हुए बताया कि सागीन की उत्पादन अवधि 40 वर्ष से चटकर 6 वर्ष की जा

सकती है। एफआरआई, मलेशिया के वक्ता द्वारा केस स्टडी के रूप में अवनमिit क्षेत्रों के पुनर्वास में शोरिया रॉक्सवर्थी की क्षमता के बारे में चर्चा की गई। वन गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार हेतु वन भूमि पुनर्स्थापन तकनीकों पर तीसरे सत्र में, एफआरआई, मलेशिया के विशेषज्ञ ने एक अग्रणी प्रजाति,

मकारंगा टेनारियस का उपयोग करके भूमि पुनर्स्थापन में सफलता पर चर्चा की। आइसुमीएन के प्रतिनिधि ने पारि-पुनर्स्थापन के प्रभाव और इंक्रोसिस्टम ट्रेड ऑफ के आकलन के लिए रेस्टोरेशन ऑफ ऑप-च्युनिटीज ऑटिगाइजेशन टूल (रूट) जैसे नवोन्मेष उपकरणों का उपयोग करके 2030

वॉन चैलेंज को पूरा करने के लिए की गई पहल पर चर्चा की। नेपाल में सामुदायिक वानिकी के माध्यम से वन पुनर्स्थापन के प्रयासों की सफलता की कहानी के साथ-साथ पर्वतीय परिदृश्य पुनर्स्थापन के लिए वित्तपोषण तंत्र में सकार की भूमिका पर नेपाल के वक्ताओं द्वारा जोर दिया गया। ग्रामीण भारत के कार्यक्रम के लिए परिदृश्य को फिर से जीवंत करने में पारिस्थितिकी तंत्र आधारित अनुकूलन की भूमिका, और विभिन्न खेती द्वारा समर्थित कोर मॉडल और गुजरत में पर्यावरण-पुनर्स्थापना के लिए सर्वोत्तम पद्धतियों को प्रस्तुत किया गया। म्यांमार के वक्ता ने मैंग्रोव पारितंत्र के बारे में बताते हुए सतत भूमि और पारितंत्र प्रबंधन में अवसरों के बारे में चर्चा की। वन पारितंत्र सेवाओं को बहाल करने में इंको-बजट की भूमिका और इसके मूल्य का आकलन करने की आवश्यकताओं को कर्नाटक की एक केस स्टडी के माध्यम से समझाया गया।